मूल्य : एक प्रति 0.50 रु.
वार्षिक 5.00 रु.

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

उत्तर - साक्षरताकर्मियों के लिए

मार्च, 2008 वर्ष 13, अंक 3

भय की बीमारी

तारादत्त पंत

चार बरस हो गए है बहू को आए। साथ वालों के दो-दो, तीन-तीन बरस के नाती पोते हो गए हैं। अपनी बहू दिन पर दिन सूखती जा रही है। किसे कहूं! रामू की मां! कोई सुनने वाला नहीं है।

बेटा है अपने मन का। जो बात दिमाग में घुस गई उसी पर अड़ा रहता है। मैंने कहा था गणतुवा (ओझा) को बुला ला। बहू को टीका लगवा दे। कोई परी-मसाड़, छील-छेदर हो तो दूर हो जाएगा। कहने लगा यह सब फिजूल की बात है। इसमें कुछ भी नहीं धरा है। मन का वहम है। जितना डरो, उतना मरो। यह कह कर कल अपने काम पर दिल्ली चला गया है।

मालती की यह बात सुनकर रामू की मां कुछ देर तक चुप रही फिर आसमान की ओर देखते हुए धीरे से बोली, “तू क्या मरी हुई है। जा गणतुवा के पास और बुला ला। चुपचाप टीका लगवा दे। ठीक हो जाएगी तो फिर बता देना बेटे को। नहीं तो चुप रहना।”

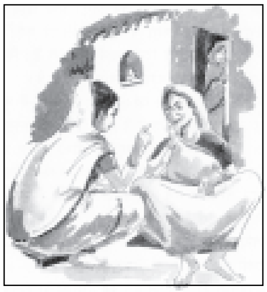

मालती थोड़ी देर तक सोचती रही। फिर एकाएक बोली, “दीवारों के भी कान होते हैं। यह बात क्या दबी रह जाएगी। लोगों के पास कहने-सुनने को है ही क्या। बस! दिन भर इसकी बात, उसकी बात।”

रामू की मां झल्लाते हुए बोली, “न रहे दबी कोई बुरा तो नहीं कर रही है। कौन नहीं सोचता है अपना भला। क्या-क्या करना पड़ जाता है।”

मालती की बात समझ में आ गई। वह सुबह-सुबह नहा-धोकर तैयार हुई। धूप बत्ती करके गणतुवा के घर चली गई। गणतुवा उस समय पूजा में बैठा हुआ था। काफी देर में वह उठा। फिर उसने चारों दिशाओं में भभूत की फुंकारी मारी। कुछ देर तक बैठे रहने के बाद मालती से आने का कारण पूछा। मालती ने सारी बात बता दी। इस पर गणतुवा ने मालती से कहा, “आप मेरे यहां आई हैं, इसका मैं आदर करता हूं। लेकिन आपका बेटा कुछ अलग तरह का है। जब विश्वास न हो तो उसको दुःख नहीं पहुंचाना चाहिए।

आपके कहने से तो मैं इस काम में हाथ डालने वाला नहीं। मन में यकीन नहीं तो कल को कोई ऊंच-नीच भी हो सकती है। तब फिर कौन संभालेगा। आपका बेटा कहे तो राजी-राजी सब कुछ हो सकता है।”

मालती निराश होकर घर लौट आई। घर आकर उसने सारी बात अपनी बहू को बताई। बहू थी बेचारी दुखियारी। दुखियारे को वैद्य प्यारा। कभी वह सास की बात में हां करे तो कभी ना। आस-औलाद की फिकर में कोई पक्का जवाब वह दे न सकी।

मालती ने रातभर सोचा। क्या करूं! क्या नहीं। फिर उसने मन बना लिया कि बेटे को एक पत्र लिखकर देख लूं। आखिर औलाद तो अपनी ही है। क्यों नहीं मानेगा। मान जाएगा तो फिर बात बन जाएगी।

मालती पढ़ी-लिखी तो थी नहीं। उसने अपने पड़ोसी मनहर के बेटे को बुलाया और यह पत्र लिखकर बेटे को भेज दिया।

पत्र में लिखा :

रानीखेत, उत्तरांचल
दिनांक 20.8.2003

प्रिय बेटा अमर!

शुभ आशीष!

हम यहां पर राजी-खुशी से हैं। तुम्हारी राजी-खुशी चाहते हैं। आगे समाचार यह है कि इस साल बारिश खूब हो रही है। घास की कोई कमी नहीं है। गाय ब्या गई है। बहुत अच्छी बछिया हुई है। खूब उछलती- कूदती है।

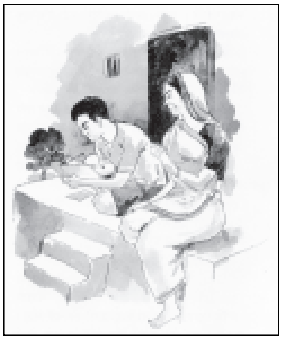

बेटा एक बात मैं तुझे बता दूं। लोग-बाग अपने पोते- पोतियों के साथ खेलते हैं। पर मैं अभागिन इस बछिया के साथ अपना मन बहलाती हूं।

बहू सूखती जा रही है। आगे की कोई आस नहीं है। सोच रही थी मरने से पहले पोता-पोती का मुंह देख जाती। पर लग रहा है यह मेरे भाग में नहीं है।

बेटा इस बार तू घर आकर बहू को टीका लगवा जा। बस यही मेरी आखिरी मुराद है।

सेतुली (सफेद) बकरी भी ब्या गई है। दो पाठे हुए हैं। भगवान सुनेगा तो बहू के पूजने के काम आएंगे। कहीं से लाने नहीं पड़ेंगे।

प्यार के साथ!

तुम्हारी मां
मालती

पत्र पढ़कर अमर मां के दुःख को सह नहीं सका। फूट-फूटकर रोने लगा। फिर कुछ देर बाद उसने अपने को संभाला और सोचने लगा। मां की खुशी में ऐसा भी करना पड़े तो क्या हर्ज है।

उसने मां को यह पत्र लिखा

स्थान दिल्ली
दिनांक 26.8.2003

पूजनीय माताजी,

चरण छूकर प्रणाम।

मैं यहां पर राजी-खुशी हूं। भगवान की कृपा से आप भी राजी-खुशी होंगी, ऐसी आशा करता हूं।

पत्र पढ़कर मुझे बहुत दुःख हुआ। यों तो भूत-पिशाच पर मुझे कोई यकीन नहीं है। लेकिन आपकी खुशी के लिए मैं आपकी आज्ञा का पालन करता हूं। मैं भादो आखिर तक घर पहुंचूंगा। तब गणतुवा को बुलाकर यह काम करवा जाऊंगा। आप चिंता नहीं करें।

अपनी बहू से कहें कि वह भी चिंता न करे।

आपका बेटा,
अमर

चौथे दिन बाद यह पत्र मां को मिल गया। मां ने मनहर के बेटे को बुलाया और पत्र पढ़ने को कहा। खबर सुनकर मां बहुत खुश हुई।

पहले उसने यह खबर रामू की मां को दी। फिर दूसरे दिन नहा-धोकर, धूप बत्ती करके गणतुवा के घर गई। गणतुवा को सारा हाल सुनाया। गणतुवा बहुत खुश हुआ। उसने कहा, ''ठीक है। जब वह आ जाएगा तो फिर मुझे बता देना। पहले एक रात को भभूत-पानी करके कोरी पूजा करनी पड़ेगी। यह पूजा आधी रात को नदी के किनारे होगी। बड़ी पूजा के लिए बकरा-मुर्गा जो भी चाहिए वह सामान उसी समय लिखवा देंगे। हो सके तो कोई बकरा नजर में रखना।''

भादो आने में दिन ही कितने थे। मुश्किल से दस-बारह। फिर उसके बीस-पच्चीस दिन बाद भादो का आखिरी हो जाना था।

मालती दिन गिनने लगी। आज सावन का आखिरी दिन है। कल से भादो लग जाएगा। आज भादो का पहला हफ्ता निकल गया। कल से दूसरा हफ्ता शुरू हो जाएगा।

यह कहते-कहते तीसरा हफ्ता शुरू हो गया। ठीक सोमवार की शाम को बेटा घर पहुंच गया। घर पहुंचकर वह गणतुवा को बुलाने गया। गणतुवा ने उसे समय दे दिया और पूजा का सामान भी लिखवा दिया।

तीसरे दिन रात को गणतुवा उनके घर आया। घर पर कुछ तंत्र-मंत्र करके पूजा का सामान तैयार करने लगा। सामान तैयार करते समय उसने कहा, ''दो आदमी भी मेरे साथ चलेंगे। नदी पर जाना पड़ेगा पूजा करने।'' चलने वालों में एक मालती का भतीजा तैयार हुआ। दूसरा ठाकुर रामसिंह।

भादो की काली रात। आधी रात का समय। चारों तरफ घास-पात व खेतों में फसल से नाक घुसाने की जगह तक नहीं। नदी-नाले सब ऊफान पर। ऐसे समय में गणतुवा ने लालटेन जलाई। दो आदमियों को साथ लिया और पूजा की डलिया उठाई व चल पड़ा।

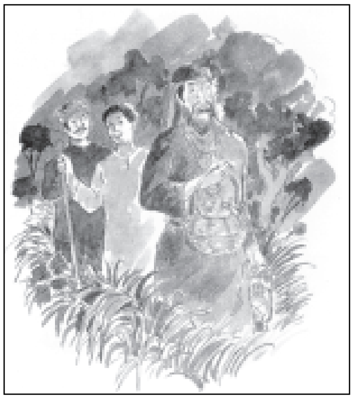

धीरे-धीरे तीनों आदमी खिसकते गए। कहीं पर मेंढक की टर-टर तो कहीं पर पानी की छपाक-छप्प। ढलान की ओर चलते-चलते वे कई खेत पार कर गए। यहां से नदी दिख जाती है। नदी से पहले सड़क आती है। सड़क पार करने के बाद दो फर्लांग और चलना पड़ता है।

नदी के उस पार है गोहना का श्मशान। और इस पार है हौना का श्मशान। इससे कुछ आगे चलो तो वहां पर है हनाड़ का पुल। इस पुल के नीचे जो गधेरा (नाला) है इसी में रहता है, वह मसाड़। जो कभी-कभी भैंसे के रूप में भी दिखता है।

सड़क के करीब पहुंचकर वे थोड़ी देर सुस्ताने लगे। जैसे वे बैठे ही थे। उनकी नजर पुल की तरफ पड़ी। वहां उन्हें सड़क पर खड़ा हुआ एक बहुत बड़ा भैंसा दिखाई दिया। भैंसे की बड़ी-बड़ी सींगें थीं। और सिर पर चांद था। उसे देखकर गणतुवा डर गया। उसने कहा, ''यही है वह मसाड़। दैत्य है पूरा दैत्य! आज भैंसे रूप में आया है। लगता है आज वह रास्ता नहीं देगा। अगर नहीं गया तो यहां से नीचे उतरना खतरे से खाली नहीं है।''

गणतुवे की इस बात से साथ में गए दोनों आदमी बहुत डर गए।

फिर गणतुवे ने कुछ मंत्र पढ़े। भभूती की फुंकारी मारी और जोर-जोर से चिल्लाने लगा। जा हट जा। भाग यहां से। छोड़ मेरा रास्ता। लेकिन भैंसा टस से मस नहीं हुआ।

इसके बाद गणतुवा कहने लगा, यहां से वापस चलना ही ठीक है। पूजा का सामान पास की झाड़ी में रखते हुए कुछ मंत्र उसने पढ़े। और वापस घर को चल पड़ा।

दूसरे दिन मालती का भतीजा और गांव के दूसरे लोग गाय-भैंस चराने वहां गए। वह भैंसा वहीं बैठा हुआ था। सिर पर उसकी चांद थी। सींग बड़े-बड़े थे।

सुनने में आया कि शाम को व्यापारी अपने जानवर लेकर रामनगर जा रहा था। रास्ते में इस भैंसे का पैर टूट गया। और वह चलने से लाचार हो गया। भैंसे की यह दशा देखकर कसाई उसे वहीं पर छोड़ गया। और दूसरे जानवरों को लेकर रामनगर चला गया।

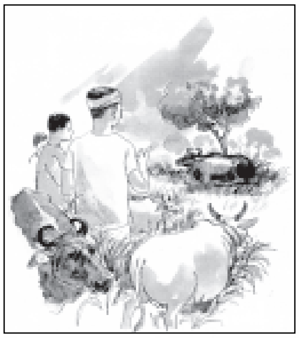

घर जाकर यह बात उसने मालती व अमर को बताई। सुनकर वे दोनों सन्न रह गए। फिर थोड़ी देर बाद मालती बोली, ''यह कैसा गणतुवा है जो मसाड़ को भी नहीं पहचानता।''

इस पर बेटा बोला, ''मां यही तो मैं कहता था कि भय ही भूत है। और कुछ नहीं है। भय मन से निकाल दो तो फिर भूत का कहीं नामो-निशान नहीं।''

इस घटना से मां की आंखें खुल गई। वह बोली, ''ठीक है। मैं बहू से मांफी मांगती हूं। उस पर कोई मसाड़ व भूत नहीं है। जा तू इसे अपने साथ शहर ले जा और इसका इलाज करा।''

मां की यह बात सुनकर बहू के सिर का भार हल्का हो गया। उस दिन उसने भरपेट भोजन भी किया। फिर वह दूसरे हफ्ते पति के साथ शहर चली गई। धीरे-धीरे उसकी तबीयत सुधरती गई। डाक्टरों को दिखाने की जरूरत नहीं पड़ी।

एक दिन बेटे का पत्र आया। मां आपको जानकर खुशी होगी कि आपकी बहू मां बनने वाली है। कोई डाक्टरी का इलाज भी नहीं करना पड़ा। भूत का भय ही उसकी बीमारी थी।

पुस्तकें मिलीं

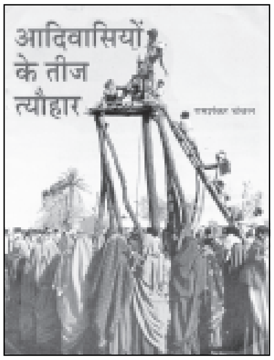

आदिवासियों के तीज त्यौहार
रमाशंकर चंचल
अचिन्त्य पब्लिकेशन
40-अखाड़ा मानखान, अतरसुईया
इलाहाबाद-211003
रु. 35.00 पृष्ठ 17

इस पुस्तक में भारत के मध्यप्रदेश की दक्षिण-पश्चिमी सीमा में स्थित झाबुआ एक आदिवासी प्रधान जिला है, के जीवन, रहन-सहन, तीज-त्यौहार जैसे भगोरिया, होली, गलचूल, गढ़ दशहरा, गाय गोयरी तथा अन्य त्यौहारों का जिक्र अत्यंत रोचकता से किया गया है। इन आदिवासियों में भील भीलाला, पटलीया जातियां अधिक पाई जाती हैं। सुदूर गांवों के अंचलों में बसने वाले इन आदिवासियों का जन-जीवन, पर्व-त्यौहार से बहुत आकर्षक है। आकर्षक चित्रांकन आदिवासियों के जीवन की जीवंत झांकी प्रस्तुत करता है।

झिलमिल तारे
कमल कपूर
उद्योग नगर प्रकाशन
695, न्यू कोट गांव
जी.टी.रोड, गाजियाबाद
रु. 75.00 पृष्ठ 64

इस पुस्तक में बच्चों और उनके बचपन पर केंद्रित 51 कविताएं हैं। कवयित्री का मानना है कि "ये गीत नहीं बल्कि प्यारे बच्चों ये 51 झिलमिल तारे हैं जब भी इन को याद करोगे। खेलेंगे ये संग तुम्हारे।" बच्चों! इन कविताओं में भूखी चिड़िया है, प्यासा कौआ है, बंदर-बंदरिया, बकरी का बच्चा, कबूतर, तितलीसभी तो हैं। कुल मिलाकर इन कविताओं में चांद-सितारे भी अपनी पूरी गरिमा के साथ मौजूद हैं। आकर्षक चित्रांकन है।

ट्रस्ट एवं संपादकीय मंडल की ओर से साक्षरता संवाद के पाठकों को रंगों के संतरंगी त्यौहार होली की हार्दिक शुभकामनाएं!

वात्सल्य जगत
घर परिवार की त्रैमासिक पत्रिका
उद्योग नगर प्रकाशन
695, न्यू कोट गांव
जी.टी.रोड, गाजियाबाद
रु. 15.00 पृष्ठ 52

इस पत्रिका में परिवार, समाज और देश के प्रति महिलाओं की रुचियों को ध्यान में रखते हुए उन पर केंद्रित कहानी और अन्य रचनाएं हैं। यह पत्रिका समाज में महिलाओं की स्थिति को सुदृढ़ करने में सहायक है।

साक्षरता संवाद के लेखक पुरस्कृत

नवसाक्षर पुस्तकों के लेखक **श्री अमर गोस्वामी** जी को साहित्यिक सेवा के लिए उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान द्वारा संतराम पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

नवसाक्षरों के लिए पुस्तकें

हर विषय की पुस्तकें
अपनी भाषा में रोचक, ज्ञानवर्धक पुस्तकों का

सूची-पत्र मंगवाने के लिए आज ही निम्न पते पर संपर्क करें

प्रबंधक (विक्रय एवं विपणन)
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

नवीनतम प्रकाशन

गुड्डी

मुकेश पचौरी पृ. 20 रु. 10.00

पटना कार्यशाला में तैयार पुस्तक किशोरी के मनोविज्ञान पर केंद्रित है। मां-बाप को चाहिए कि वे कुछ पल बच्चों के साथ बिताएं और उनकी भावना को समझें।

ISBN 978-81-237-5194-8

गुलाबा

नलिनी श्रीवास्तव पृ. 15 रु. 9.00

नलिनी श्रीवास्तव की यह कहानी गुलाबा जैसी कर्मठ और लग्न की पक्की महिला के संघर्ष की गाथा कहती है। गुलाबा अपनी मेहनत और लग्न से अपने पुत्र खेमलाल को पढ़ा लिखाकर एक बड़ा अफसर बनाती है।

ISBN-978-81-237-5094-1

पापड़ बड़ी बनाएं (महिला सशक्तीकरण)

प्रज्ञा बाछोतिया पृ. 17 रु. 9.00

यह पुस्तक महिलाओं को आर्थिक रूप से संपन्न बनाने में मददगार साबित होगी। यह पुस्तक लघु उद्योग को बढ़ावा देने वाली है। सरल भाषा में लेखिका ने बड़ी बारीकी से पापड़ बड़ी बनाने के तरीके समझाएं हैं। आकर्षक चित्रांकन द्वारा इन तरीकों को समझने में और भी सुविधा होगी।

ISBN 978-81-237-5199-3

ऐसा ही होगा

निशात फातमा पृ. 12 रु. 9.00

निशात फातमा की यह कहानी गुटखा, तंबाकू और अन्य नशीले सेवन की चीजों के कारण मनुष्य के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्परिणामों का जिक्र करती है। उनके सेवन पर रोक लगाने को जागरूक करती है। कहानी का मुख्य पात्र पंकज 11-12 वर्ष का बालक है। वह ट्रेन में गुटखा बेचने का कार्य करता था। अंत में एक यात्री की बिगड़ती हालत का स्वयं को जिम्मेदार मानकर जीवन में कभी ऐसा न करने की प्रतिज्ञा करता है।

ISBN-978-81-237-5106-1

बड़े दिलवाला

डॉ. हरप्रीत सिंह प्रेस में

यह पुस्तक बताती है कि मनुष्य को हर स्थिति का सामना डटकर करना चाहिए। जीवन में आने वाली किसी भी मुसीबत से घबराना नहीं चाहिए। इस कहानी के पात्र को जब पता चलता है कि उसे दिल की बीमारी है तो वह इसका बड़ी बहादुरी से मुकाबला करता है। और उन सभी बातों का ख्याल रखता है जो इस बीमारी की रोकथाम में सहायक हैं।

मेरी फ्रीडा बेदी

मनोरमा दीवान प्रेस में

भारतीय स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने वाली प्रथम ब्रिटिश महिला के जीवन की रोमांचक कथा प्रस्तुत करती, एक अत्यंत प्रेरणात्मक कहानी है। आकर्षक चित्रांकन है।

मल्लिका नूरजहां

मनोरमा दीवान पृ. 12 रु. 9.00

यह कहानी हिंदुस्तान की पहली महिला सम्राज्ञी मल्लिका नूरजहां के जीवन की जीवंत झांकी प्रस्तुत करती है। आकर्षक चित्रांकन कहानी को और भी रोमांचक बना देता है।

ISBN-978-81-237-5204-4

रईस

सैयद जखेद हसन पृ. 11 रु. 9.00

बाल मजदूरी पर केंद्रित यह कहानी अत्यंत मार्मिक है। इस कहानी का मुख्य पात्र रईस दस-ग्याहर वर्ष का बालक है। वह एक बल्ब फैक्टरी में काम करता था। वह बालक बड़ा ही स्वाभिमानी और बहादुर था। उसने मालिक के अन्याय के विरोध में फैक्टरी जाना बंद कर दिया। अंत में उसके मालिक को पुलिस बाल मजदूरी के अपराध में जेल में डाल देती है।

ISBN-978-81-237-5107-8

त से तेनालीराम ब से बीरबल

दिविक रमेश पृ. 23 रु. 10.00

इस पुस्तक में तेनालीराम और बीरबल की क्रमशः लालच की हार और झपकी, इन दो कहानियों को लिया गया है। ये

कहानियां आज भी अपनी बौद्धिकता एवं सूझबूझ के लिए जनमानस में लोकप्रिय हैं। तेनालीराम और बीरबल ने अपनी सूझबूझ से समाज में ढेरों उदाहरणों और कार्यों द्वारा आम जनता को न्याय दिलवाया। आकर्षक चित्रांकन ने कहानी को रोचक बना दिया है।

ISBN-978-81-237-5099-6

मूमल महेन्द्र की प्रेमकथा

मीनाक्षी स्वामी पृ. 19 रु. 9.00

जैसलमेर की रियासत लोदरवा की राजकुमारी मूमल और अमरकोट के राजकुमार महेन्द्रसिंह की अमर प्रेम कहानी पर आधारित है यह पुस्तक। आकर्षक चित्रांकन कहानी को जीवंत कर देता है।

ISBN-978-81-237-5070-5

पाठकीय प्रतिक्रिया

- 'साक्षरता संवाद' नियमित प्राप्त हो रहा है। साक्षरता संवाद निरंतर बेहतर होता जा रहा है। नवसाक्षरों के लिए यह उपयोगी है ही साक्षर भी इसके दीवाने हो रहे हैं।

लक्ष्मी विमल, झारखंड

- नियमित नियम से नम्रता पूर्वक रसास्वादन कराती आपकी सीधी-सादी पत्रिका मेरे घर के द्वारे पर दस्तक देती है हमसे कुछ नहीं लेती है।

'शब्द-शब्द है शाश्वत, 'श्याम श्वेत' सब रंग,
बच्चों की संवदेना, कदम कदम के संग।
कदम कदम के संग, प्यार से प्यार सिखाए,
'साक्षरता संवाद' सभी के मन को भाए।
कह 'प्रेमी' कविराय, हम सब इसके साधक,
आभारी हूं सदा आपका मैं, 'संपादक' ॥

कवि विजय प्रेमी, कबाड़ी बाजा (मेरठ)

- 'साक्षरता संवाद' का जनवरी अंक पढ़ा। मुख्य पृष्ठ पर कहानी 'गुरु जी' पढ़ीआप बड़े लेखकों को जिस तरह महत्व देते हैं उसी तरह छोटे लेखकों को भी महत्व देते तो हमें शिकायत का मौका नहीं मिलता। 'साक्षरता संवाद' को आप और बहुउपयोगी बनाए तथा इसे 20 पृष्ठ की पत्रिका बना दें ताकि ज्यादा रचनाएं पढ़ने को मिल सके। आशा है 18वें विश्व पुस्तक मेले की सारी रपट फरवरी अंक में जरूर हमें पढ़ने को देंगे।

बद्रीप्रसाद वर्मा अनजान, गोलाबाजार गोरखपुर

- बुलेटिन वर्ष 13 अंक- 1 जनवरी 2008 कुछ अच्छा नहीं लगा। "गुरु जी" में क्या है सिवा इसके कि यह कहानी शरतचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा लिखित है। नकली दाढ़ी भी ऐसी ही है। शरारती तो सभी बच्चे होते हैं लेकिन अशिष्टता और असभ्यता के दर्जे के शरारती बच्चों को पढ़ने में बहुत तेज क्यों दर्शाया जाता है?

उग्रनाथ नागरिक

- मुझे 'साक्षरता संवाद' पत्रिका नियमित रूप से मिल रही है। जनवरी 2008 के अंक में हरिमोहन द्वारा अनूदित शरतचंद्र चट्टोपाध्याय की कहानी 'गुरु जी' सुनील कुमार फुल्ल की 'नकली दाढ़ी' तथा गोनू झा की 'अकल और भक्ति' नवसाक्षरों के लिए बहुत ही उपयोगी है। 'चम्पा काले अच्छर नहीं चीन्हती' महान कवि त्रिलोचन शास्त्री के लिए श्रद्धांजलि तो है ही बालिकाओं को पढ़ाने के लिए संदेश-निर्देश भी है। 'उत्तराखंड बाल शिक्षा मेला' समाचार हमें देश में हो रही गतिविधियों की सूचना देने का एक हिस्सा है।

धर्मपाल आर्य, हरिद्वार

- 'साक्षरता संवाद' के रोचक मनोपयोगी एवं शिक्षाप्रेरक अंक बराबर मिलते रहे हैं। यह नवसाक्षरों एवं शिक्षा के माध्यम से ज्ञान विकास हेतु अत्यंत प्रेरक पत्रिका है।

शंकर सुल्तानपुरी (लखनऊ)

शिक्षा का महत्व

प्रीति

मैंने अपनी मां से पूछा
शिक्षा पर दो लाईन बताओ
मेरी मां ने मुझको डांटा
और कहा कि चुप हो जाओ
मैंने अपनी मां

सुबह होते ही मैं स्कूल गई
आते ही उन्होंने बुलाया
अपना फैसला मुझे सुनाया
और कहा कि स्कूल मत जाओ
मैंने अपनी मां

तबसे मैंने चुप्पी साधी
शुरू हुई वहीं से बर्बादी
सासु मां ने मुझसे कहा
साथ अपने दहेज भी लाओ
मैंने अपनी मां

पति ने भी ना साथ निभाया
उसने भी मुझको धमकाया
अपनी मां का पक्ष लेकर
मुझसे कहा भाग जाओ
मैंने अपनी मां

मैं सोच रही थी कहां जाऊं
किसका दरवाजा खटखटांऊ
तभी एक आवाज आई
मैंने अपनी मां

मैंने देखा इधर-उधर
कुछ ना मुझे आया नजर
एक किताब ने उठकर कहा
इस लड़की को प्रकाश दिखाओ
मैंने अपनी मां

अनजानी थी खुशी मुझे
सिर्फ इस बात की
जब स्वयं शिक्षा की देवी ने
मुझसे हाथ मिलाया
मैंन अपनी मां

R. N.I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4078/06-08
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2006-08
Mailing date 25/26

काश! लोगों ने उसका गट्ठर उठवा दिया होता

ओमप्रकाश मंजुल

पंद्रह वर्ष पूर्व वाराणसी जिला के टिकरी गांव की घटना है। क्वांर का महीना था और सायं के कोई पांच बज रहे थे। क्वांर में दिन काफी छोटा हो जाता है। गांव से लगभग चार फर्लांग दूर एक अधेड़ दलित महिला सड़क से लगे अपने खेत में चरी के भारी गट्ठर के पास किसी ऐसे भले मानुष की प्रतीक्षा में खड़ी हुई थी, जो गट्ठर को उठवाकर उसके सिर पर रखवा दें। किसी तरह गट्ठर सिर तक पहुंच पाए, फिर उसे घर तक तो वह ले ही जाएगी। अब तक उधर से गुजरने वाले कई लोगों, जिनमें अधिकतर छोटे ही लोग थे, से वह गट्ठर उठवाए जाने के लिए खुशामद कर चुकी थी। पर किसी ने भी महिला की मदद नहीं की। कुछ ने उसे अनसुना कर दिया। कुछ ने 'जल्दी में होने का बहाना बना दिया। तो किसी ने मुंह बिचका कर कहा,''हम त्वहार कौने नौकर थोड़े है न, इतना काट ही काहे लिए जो उठी नाहीं सकत, मोर गइया भैंसिया थोड़े न खइ हैं, खइ हैं त त्वहार ही गोरू।''

चरी तो वह रोज ही काट कर ले जाती थी। पर आज अनुमान से कुछ अधिक कट जाने के कारण गट्ठर अधिक भारी हो गया था। आधा-आधा करके दो बार में ले जाने पर अंधेरा होने का डर था। उस स्थिति में उसे दूसरों से तो खतरा था ही अपनी सास और पति से डांट-मार खाने का डर भी था। सो वह गट्ठर को एक बारगी ही ले जाना चाहती थी। वह रुक-रुककर घुटनों के बल बैठकर, कभी टांगों को सीधा फैलाकर, हर संभव तरह से गट्ठर उठाने का प्रयास करती रही, पर गट्ठर उससे नहीं उठा।

अचानक बड़ा गांव कस्बा से टहलने के लिए आते हुए एक सूटेडे-बूटेड बाबूजी दिखाई दिए, जो देखने में किसी ऊंचे घराने के मनसेधू (सज्जनपुरुष) लग रहे थे। उनकी पोजीशन भांप कर महिला की उनसे गट्ठर उठवा लेने की रही-सही आशा भी जाती रही। ऐसे जंटलमैन से चरी उठवाने की चिरौरी करने में भी उसे डर लग रहा था। पर मरता क्या न करता। उसने सोचा-बाबूजी अधिक से अधिक गट्ठर उठवाएंगे नहीं, कोई मारने थोड़ा ही लग जाएंगे। सो किसी भांति हिम्मत बटोर कर वह दूर से ही उन्हें सुनाने के लिए धीमें स्वर में कहने लगी, ''कइयौ लोगन से चिरौरी कइलीं, केऊत नाहीं उठवाए। ई विचारे बाबू का उठवइ हैं। ई त खुदई बड़ मनई लगत है न। इनका त अउर गंदा लगन का डर होई। अगर हम आधा-आधा करकें कम ले जाई, त मनसेधू (स्वामी) का डांट और सास जी का ताना सहीं। दू बार में ले जाईं, त रात भइले पा और दुर्गति झेलीं। चलै मन इनहीं स कहि क देखत है न। हो सकेत उठवाई दें।''

बाबू जी को महिला की परोक्ष गुहार समझने में देर न लगी। उसने गट्ठर उसके सिर पर रखवा दिया। वह अपनी टूटी-फूटी भाव-भाषा से उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हुई घर को चल दी। अब उसके सिर पर भारी बोझ होते हुए भी। उसका मन काफी हल्का था। वह बड़बड़ाती हुई जा रही थी, ''मनई कहत है न कि बड लोग अच्छे नाहिं होत लेकिन यहां त हम उल्टे देखत है न ह मैट छुटि कै लोग खराब नजर आवत हैन, केतन लोगन सें चिरौरा कइलो, एकू ट नाही उठवाए। ई बाबू त बिना कहे उठवाइ दीन, भोले बाबा इनकी बाल बचन के सुखी रखें।''

यह बाबू जी आज भी एक डिग्री कॉलेज में प्राचार्य हैं।

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : देवशंकर नवीन
संपादकीय सहयोग : कमलेश कुमारी
उत्पादन सहयोग : नरेन्द्र कुमार

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की ओर से श्रीमती नुज्हत हसन द्वारा एस.एस. इंटरप्राईजेस, प्रथम तल, 10/8020 मुलतानी ढांढ़ा, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55 से टाईपसेट तथा अरावली प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, डब्ल्यू-30, ओखला फेज II, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित एवं ए-5 ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-110016 से प्रकाशित।